पाठ 13. दोहावली

पाठ का परिचय

1. मनुष्य को घमंड न करते हुए ऐसी वाणी बोलनी चाहिए, जिसे सुनकर उसके मन को भी अच्छा लगे और दूसरे लोग भी उसकी वाणी से प्रभावित हों। मीठी या मधुर वाणी से व्यक्ति सहज ही सबका मन जीत लेता है।
2. किसी भी बात की अति अच्छी नहीं होती। यदि अधिक वर्षा होती है तो बाढ़ आ जाती है। इसी प्रकार अधिक बोलने से मनुष्य अपना सम्मान खो देता है और अधिक चुप रहने से वह अपने मन की बात किसी से भी नहीं बाँट पाता।
3. कबीरदास जी कहते हैं कि हमें निंदक को सदैव अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि निंदा करने वाला व्यक्ति आपको आपमें छिपी बुराई से अवगत कराता है, जिसे जानकर आप उस बुराई को दूर करने का प्रयत्न कर सकते हैं। आपके मन को वह बिना किसी प्रयत्न के साफ़ करने में आपकी सहायता करता है।
4. केवल पुस्तक के ज्ञान से ही मनुष्य ज्ञानी नहीं हो जाता, उसे आवश्यकता है प्रेम के ढाई अक्षर जानने की। अर्थात् प्रेमपूर्ण व्यवहार से ही वह दुनिया को जीत सकता है, केवल पुस्तक का ज्ञान काफ़ी नहीं।
5. कबीरदास जी कहते हैं कि कस्तूरी हिरण की नाभि में ही होती है लेकिन उस कस्तूरी को पाने के लिए वह यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। उसी प्रकार मनुष्य यह नहीं जानता कि ईश्वर का वास उसके भीतर ही है, उसकी आत्मा में ही वे निवास करते हैं। वह ईश्वर को पाने के लिए मंदिर-मस्ज़िद भटकता रहता है।
6. कबीरदास जी कहते हैं कि जब मैं बुरे व्यक्ति की खोज में निकला तो मुझे कोई बुरा व्यक्ति न मिला, लेकिन जब मैंने अपना दिल टटोला तो पाया कि मुझसे बुरा और कोई नहीं है।

पाठ का वाचन

दोहों का गायन कक्षा में लय के साथ करें। बच्चों को भी दोहे गाने को कहें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए दोहों का सरलार्थ बताएँ। बच्चों को दोहे में आई नीतिपूर्ण बातें उदाहरणसहित समझाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बच्चों से कक्षा में चर्चा करें –

- हमें सदैव मीठी वाणी क्यों बोलनी चाहिए?
- किसी भी बात की अति क्यों अच्छी नहीं होती?
- निंदक को हमेशा पास क्यों रखना चाहिए?
- मनुष्य को अपने भीतर क्यों झाँकना चाहिए?